REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 7 | ISSUE - 8 | MAY - 2018

वैधव्य का पुरूषों (विधुरों) के जीवन पर प्रभाव

डॉ. ज़किया रफत
एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष ,
समाजशास्त्र विभाग , आर0बी0डी0 स्नातकोत्तर महिला महाविद्यालय, बिजनौर.

सारांश–

वैधव्य को सभी समाजों में जीवन की सबसे कष्टप्रद घटना माना जाता है। पति/पत्नी में से किसी एक की मृत्यु के जीवित साथी पर अनेक नकारात्मक प्रभाव पड़ते है। पुरूषों के लिए विधुर का जीवन जीना बहुत कठिन है। पत्नी की मृत्यु के बाद परिस्थितियां तेजी से बदलती है जिनके साथ समायोजन करना बहुत दुष्कर होता है। यद्यपि उनको समायोजित करवाने में परिवार, मित्र आदि सहायता प्रदान करते हैं परन्तु फिर भी गृह प्रबन्धन, बच्चों की देखभाल तथा जीविकोपार्जन को लेकर अत्यधिक दबाव उनके जीवन के विविध पक्षों को प्रभावित करता है। वर्तमान शोध लेख का उद्देश्य बिजनौर नगर में विधुरों के जीवन पर वैधव्य के प्रभाव को जानना है।

प्रस्तावना :

विश्व के सभी समाजों में पति/पत्नी की आकस्मिक मृत्यु एक अदृश्य आपदा है। वैधव्य को जीवन की सबसे पीड़ादायी घटना माना जाता है। (होलम्स राहे, 1967) पति/पत्नी की मृत्यु अपने जीवन साथी के प्रति घनिष्ट भावात्मक लगाव को अभिव्यक्त करती है। (बाउलबाइ, 1980), पति/पत्नी में से किसी की मृत्यु होने पर जो स्थिति उत्पन्न होती है वह 'वैधव्य' कहलाती है। जब किसी पुरूष की पत्नी की मृत्यु हो जाती है तो उसे 'विधुर' कहते है तथा जब किसी महिला के पति की मृत्यु हो जाती है तो उसे 'विधवा' कहा जाता है। (विकीपीडिया) 'वैधव्य' महिला हो अथवा पुरूष सभी के लिए बहुत ही कठिन है। कुछ पुरूषों/महिलाओं के लिए यह स्थिति स्थायी होती है क्योंकि वे आजीवन वैधव्य का पालन करते है जबकि कुछ पुरूषों/महिलाओं के लिए यह अस्थायी होती है। वे अपने जीवन साथी की मृत्यु के कुछ समय बाद पुनर्विवाह करके इस स्थिति से छुटकारा प्राप्त कर लेते है।

ली तथा अन्य (1998, 2001) तथा अम्बर्सन (1992) के अध्ययन विधुरों पर 'वैधव्य' के गहन प्रभाव की ओर संकते करते है। साक्ष्य इस पक्ष में है कि 'वैधव्य' पुरूषों के लिए अधिक कठिन है। जीवन साथी की मृत्यु से उन्हें गहरा सदमा लगता है। पत्नी से बिछुड़ने पर वे शोक निमग्न हो जाते है। पत्नी की मृत्यु उनके जीवन की बहुत बड़ी हानि होती है। उसके जाने से उनके समक्ष अनेक समस्याएं उठ खड़ी होती है।

किसी भी परिवार में पत्नी केन्द्रीय भूमिका में होती है। समस्त गृहस्थी को संभालना तथा परिवार के प्रत्येक सदस्य की देखभाल का दायित्व उस पर होता है। स्टोरबे तथा स्टोरबे (1983) के अनुसार, परिवार में पत्नी की मृत्यु के बाद जीवित पति को घरेलू प्रबन्धन के सभी आवश्यक कार्यों का निष्पादन करना पड़ता है। उन पर दोहरी जिम्मेदारी आ जाती है। उन्हें पिता के साथ–साथ मां की भूमिका का भी निर्वहन करना होता है। जीविकोपार्जन करना भी उन्हीं की जिम्मेदारी है। यह परिस्थिति उनके लिए बहुत कष्टप्रद है। कार तथा उट्ज (2002) ने अपने अध्ययन में पाया कि घरेलू कार्यों को करने की आवश्यकता विधुरों के लिए जबरदस्त तनाव का स्रोत है। बच्चों एवं गृहस्थी संभालने के कारण वे अपने व्यवसाय पर कम समय व ध्यान देते है। फलस्वरूप आर्थिक संकट खड़ा हो जाता है। इतना ही नहीं मृत पत्नी के रिक्त स्थान की क्षतिपूर्ति होना लगभग असम्भव होता है, क्योंकि कुछ समय बाद वे अपने लिए पत्नी भले ही प्राप्त कर लें परन्तु बच्चों को माँ नहीं मिल पाती।

प्रायः यह भी देखा गया है कि सन्तान होने की स्थिति में समाज में व्यक्ति अपनी कुंवारी लड़की का विवाह इनके साथ करना पसन्द नहीं करते। व्यस्क सन्तान होने की स्थिति में वे अपने पिता के पुर्नविवाह का विरोध करते है। यद्यपि मृत पत्नी के क्रिया कर्म में सम्मिलित होने वाले पड़ौसी, मित्र, रिश्तेदार, क्रियाकर्म सम्पन्न होते ही विधुरों पर पुनर्विवाह के लिए दबाव बनाने लगते है। यह समाज में अपने पूर्व अनुभवों के आधार पर उदाहरण के लिए पहले हुए विधुरों के पुर्नविवाह के बाद पहली सन्तान और नयी पत्नी के बीच प्रतिदिन घरेलू संघर्ष को देखते हुए पुनर्विवाह करने से डरते है और एकाकी जीवन जीने को विवश होते है जिसका उनके शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव पड़ते है।

इस प्रकार विधुरों के जीवन में पत्नी की मृत्यु के बाद परिस्थितियां तेजी से बदलती है और उनके साथ सामंजस्य बिठाने में अनेक समस्याएं आती है। ली, डिमैरिस तथा सुलिवान (2001) ने निष्कर्षित किया है कि वैधव्य जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित करता है। सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, शारीरिक, व्यावहारिक तथा आर्थिक पक्ष पर इसके महत्वपूर्ण परिणाम दिखायी पड़ते है। अतः पुरूषों (विधुरों) के लिए वैधव्य बहुत ही असहज तथा कठिन परिस्थिति है। उन्हें अनेक संकटों से जूझना पड़ता है। यह बहुत ही गहन तथा संवेदनशील विषय है जिस पर शोध किये जाने की अत्यधिक उपादेयता है। यह भी दुःखद है कि भारतीय समाजशास्त्रीयों द्वारा विधवाओं पर तो बहुत शोध कार्य किया गया परन्तु विधुरों की समस्याओं पर ध्यान नहीं दिया गया। प्रस्तुत शोध लेख इसी कमी को दूर करने की दिशा में एक प्रयास है।

उददेश्य :

वर्तमान शोध लेख का प्रमुख उददेश्य विधुरों के जीवन के विविध पक्षों (परिवार, सामाजिक, आर्थिक तथा स्वास्थ्य) पर वैधव्य के प्रभावों का अध्ययन करना है।

अध्ययन क्षेत्र :

वर्तमान अध्ययन पश्चिमी उत्तर प्रदेश में स्थिति बिजनौर नगर में सम्पन्न किया गया है।

अध्ययन विधि :

वर्तमान अध्ययन हेतु उददेश्यपूर्ण निदर्शन प्रविधि के प्रयोग द्वारा 30 विधुरों (युवा+प्रौढ़+वृद्ध) का चयन किया गया।

तथ्य संकलन :

चयनित इकाईयों से साक्षात्कार तथा अवलोकन प्रविधि के माध्यम से सूचनाओं का संकलन किया गया।

उपलब्धियाँ :

वर्तमान अध्ययन की निम्न उपलब्धियाँ रहीं हैं।

विधुरों के जीवन पर वैधव्य के प्रभाव :

विधुरों के जीवन के विविध पक्षो पर वैधव्य के निम्न प्रभाव दिखाई पड़ते हैं।

(अ) परिवार :

पत्नी की मृत्यु का सबसे अधिक प्रभाव परिवार पर पड़ता है। विधुरों के सामने खाना बनाने, बच्चों का पालन पोषण करने तथा घरेलू कार्यों को करने की बहुत बड़ी कठिनाई आती है। क्योंकि भारतीय समाज में लिंग आधारित श्रम विभाजन के कारण उपर्युक्त समस्त कार्यों को करने का दायित्व पत्नी का है।

हैजस्टर्ड (1983) के अध्ययन से पता चलता है कि घर के भीतर पत्नी को बच्चों को रखने तथा वस्तुओं और सेवाओं के आदान–प्रदान करने की सुविधा के रूप में देखा जाता है।

एनटोन्यूसी (1990) का मत है कि पत्नी भावात्मक सुरक्षा भी प्रदान करती हैं। पत्नी की मृत्यु के बाद उसके दायित्वों के निर्वहन की जिम्मेदारी जीवित पति पर होती है। यदि एकाकी परिवार है तो यह संकट और

भी विकट हो जाता है कि वह जीविकोपार्जन हेतु काम पर जाए अथवा घर में रहकर गृहस्थी और बच्चों को देखें। क्योंकि जो रिश्तेदार पत्नी की मृत्यु पर शोक संवेदना व्यक्त करने आये होते है। वे भी अपने–अपने घर वापिस जाने लगते हैं, क्योंकि आजकल एकाकी परिवारों का प्राधान्य होने के कारण, वे रिश्तेदार महिलाएं भी अपना परिवार छोड़कर इनके साथ रहने की स्थिति में नहीं होती है। इसके अतिरिक्त घरेलू नौकरानी भी पत्नी विहीन घर में कार्य करने से मना कर देती है। यह परिस्थिति बहुत असमंजस की होती है। इससे समायोजन करना बहुत कठिन होता है। ऐसे में वे समझ नहीं पा रहे होते है कि घर देखे या जीविकोपार्जन के लिए जाए तथा बच्चों को अकेला कैसे छोड़े? कार तथा उट्ज (2002) ने अपने अध्ययन में पाया कि घरेलू कार्य को करने की आवश्यकता विधुर/विधवा के लिए जबरदस्त तनाव का स्रोत हैं

ली (2001), अम्बर्सन तथा अन्य (1998) ने निष्कर्षित किया है कि विधुरों को घर का काम अधिक चुनौतीपूर्ण नहीं लगता। वे गृह कार्यों को करना नापसन्द करते है। आम तौर पर आवश्यकता पड़ने पर यह कार्य करना उनके लिए अधिक अवसाद से भरा हुआ होता है।

गुप्ता (1999), साउथ एण्ड स्पिट्ज (1994) ने पाया कि विधुरों को विवाहितों की तुलना में अधिक कार्य करना पड़ता है। अध्ययन क्षेत्र में विधुरों के परिवार पर वैधव्य के निम्न प्रभाव पाये गये।

26 प्रतिशत विधुरों को छोटे बच्चों की देखभाल व खाना बनाने की समस्या थी। कोई भी बच्चा इतना बड़ा नहीं था कि पिता का गृह कार्यों में सहयोग कर सके या छोटे भाई बहन की देखभाल कर सके। इनके सामने पारिवारिक समस्याएं बहुत अधिक थी।

40 प्रतिशत विधुरों के पुत्र–पुत्रियां किशोरावस्था में थे। खाना बनाने तथा गृह कार्यों में वे पिता का सहयोग करते थे। तथा घर में भाई बहन अकेले भी रहे लेते थे। आपस में एक दूसरे की सहायता करते थे। इनके समक्ष पारिवारिक समस्याएं अपेक्षाकृत कम थी। यद्यपि इनके बच्चों की पढ़ाई प्रभावित हो रही थी। घर के कार्यों के कारण बड़े बच्चों को घर पर रूकना पड़ता था।

14 प्रतिशत विधुरों के परिवार में गृह कार्यों या भोजन पकाने की समस्या नहीं थी। परन्तु उनके विवाह योग्य पुत्र–पुत्रियां थे। पत्नी की मृत्यु के बाद यह समस्या थी कि लड़कों के लिए लड़की कौन देखने जाए। वे अकेले कैसे जाएँ तथा लड़की को देखने लड़के वाले आते है तो उनके पास कौन बैठे? क्योंकि महिलाओं के पास बैठने के लिए कोई महिला होनी चाहिए। अतः उनके आने से पहले इन्हें अपनी बहन, भाभियों या पड़ौसनों में से किसी को बुलाना पड़ता था और व आने में नखरे दिखाती थी। सन्तान के विवाह के समय भी रस्मों रिवाज, लेन देन, कपड़ों व जेवर की खरीदारी करने में परामर्श के लिए रिश्तेदार महिलाओं के घर बार–बार जाना पड़ता था। विवाह में सम्मिलित होने जो मेहमान घर में आये। उनके स्वागत सत्कार करने में भी समस्या आयी थीं।

20 प्रतिशत विधुरों के पुत्र–पुत्रियां विवाहित थे। इनमें से 12 प्रतिशत विधुर पुत्रों के साथ रह रहे थे। उनका अपनी पुत्र वधुओं से प्रतिदिन, कभी खाने, कभी कपड़े धोने तथा कभी बच्चों की पढ़ाई को लेकर झगड़े होते रहते थे। एक बुजुर्ग विधुर ने बताया कि, ''जब से सास की मृत्यु हुई है! इसे किसी का डर नहीं रहा है। इसके पैर निकल आये है। पति के घर से निकलते ही कभी पड़ौस के घरों में कभी बाजार में घूमती रहती है। सुबह ही खाना बनाकर रख दिया और घर से निकल गयी।'' एक अन्य बुजुर्ग विधुर ने बताया कि ''बहुएं मेरी परवाह नहीं करती। अपनी इच्छानुसार भोजन बनाती है। इससे कोई मतलब नहीं कि वह भोजन मुझे वृद्धावस्था में पचेगा भी या नहीं।''

एक अन्य बुजुर्ग का कहना था कि बहु और पोती–पोता सारा दिन कभी टी0वी0 तो कभी मोबाइल पर रहते है। हमारे लिए उनके पास समय नहीं है।

एक अन्य बुजुर्ग विधुर ने बताया कि ''जब मेरी पत्नी जीवित थी तो घर–घर सा लगता था अब तो अपना ही घर–घर सा नहीं लगता।''

इसके अतिरिक्त 8 प्रतिशत विधुर जो पहले से ही पुत्र वधुओं को नापसन्द करते थे। वे पत्नी की मृत्यु के कुछ दिन बाद से ही अपनी पुत्रियों के साथ रह रहे है। उनके बच्चों के साथ प्रसन्न है।

जैसा कि ली (1998) के अध्ययनों से पता चलता है कि पुत्रों की अपेक्षा पुत्रियां विधुर माता–पिता की अधिक देखभाल करती है। विधुर माता–पिता में सन्तान को विधवा माता की आवश्यकता होती है क्योंकि वे

अपनी बेटियों की स्वयं देखभाल करती है जबकि विधुर पिता की देखभाल पुत्रों व पुत्रियों को करनी पड़ती है। विधुर मित्रों, पड़ोसियों तथा रिश्तेदारों से भी सहायता प्राप्त करते है।

आर्थिक :

पत्नी की मृत्यु के बाद विधुरों की आर्थिक स्थिति प्रभावित हुई। उनके कामकाज पर प्रभाव पड़ा। 20 प्रतिशत विधुर श्रमिक थे वे राजगीरी, मजदूरी, सब्जी व फलों की ढेली लगाना आदि कार्यों में संलग्न थे। उनका रोज़ का खाना कमाना था। पत्नी की मृत्योपरांत काम पर न जाने के कारण आर्थिक तंगी हो गयी और कर्ज लेना पड़ा।

50 प्रतिशत विधुर व्यापारी थे उनकी स्वयं की दुकान थी तथा 25 प्रतिशत का स्वरोजगार था। घर में बच्चों को अधिक समय देने के कारण दुकान पर नौकर रख दिया। तो व्यापार घाटे में चला गया।

10 प्रतिशत व्यक्ति दिल्ली में नौकरी करते थे। उन्हें नौकरी छोड़नी पड़ी क्योंकि रिश्तेदारी में कोई भी ऐसी महिला नहीं थी जो बच्चों के साथ रह सके। 15 प्रतिशत विधुरों की पुत्र व पुत्रियां युवा थे। अतः उन्होंने अपने पुत्रों को काम पर भेजना शुरू किया और स्वयं घर पर रहने लगे। परिणाम स्वरूप काम आना कम हो गया।

5 प्रतिशत विधुर सरकारी सेवा में थे, उनकी दूसरे शहर में पोस्टिंग थी। उन्होंने अपने गृह नगर में स्थानान्तरण करवा लिया था।

सामाजिक जीवन :

विधुरो के पत्नी की मृत्यु के उपरान्त सामाजिक जीवन के अनुभव अलग–अलग होते है। यद्यपि वैधव्य के दैनिक जीवन में सामाजिक व व्यावहारिक ज्ञान के विषय में बहुत कम ज्ञान उपलब्ध है। ली, डिमैरिस तथा सुलिबान (2001) ने निष्कर्षित किया है कि विधुर कम सामाजिक होते है। वे घरेलू कार्य करना, चर्च जाना तथा बच्चों की सहायता करना पसन्द नहीं करते। रिबेका एल0 उट्ज तथा अन्य (2002) ने अपने अध्ययन में पाया कि वृद्ध विधुर अपने गैर विधुर समकक्षों की तुलना में परिवार और मित्रों के साथ अधिक समय बिताते थे। हमने अपने अध्ययन क्षेत्र में पाया कि पत्नी की मृत्यु के बाद विधुरों की स्थिति में परिवर्तन आ जाता है। वे सपत्नीक जिन मित्रों व रिश्तेदारों के परिवारों में बे रोक–टोक आते–जाते थे। उन परिवारों में विधुर होने के बाद आना–जाना बहुत कम हो गया है। आस पड़ौस की तथा रिश्तेदार महिलाएं इनके घर आने–जाने से कतराती है और इनसे बात करने में संकोच करती है। केवल बुजुर्ग विधुरों की स्थिति में अन्तर होता है। इनके घरों में नौकरानी काम करने नहीं आना चाहती। जो पहले से काम कर रही होती है। वे भी पत्नी की मृत्यु के बाद काम छोड़कर चली जाती है। अतः घर के कार्यों की अधिकता तथा बच्चों की देखभाल आदि कार्यों को करने के कारण उनकी सामाजिक सहभागिता बहुत कम हो जाती है। जो युवा व प्रौढ़ विधुर होते हैं, उन पर समाज पुर्नविवाह कने के लिए दबाव बनाने लगता है। इनके सामने प्रतिदिन कोई न कोई पड़ौसी, मित्र अथवा रिश्तेदार किसी विधवा या तलाकशुदा महिला के साथ विवाह करने का प्रस्ताव रखता रहता हे। इनकी युवा सन्तानों पर भी वे सब उनके पिता का पुर्नविवाह करवाने के लिए दबाव डालते है। जिनकी सन्तानें व्यस्क हैं। वे विधुर विवाह नहीं करना चाहते क्योंकि सन्तानें इसका विरोध करती है तथा उनके स्वयं के माता–पिता भी उनसे पुर्नविवाह करने को मना करते है। उनका कहना होता है कि, ''लड़के/लड़कियां युवा हो रहे है। अब इनका विवाह करना। क्या अब तुम्हारी विवाह की उम्र है या बच्चों की? बच्चों को संभालो।'' केवल कम आयु के विधुरों का ही उनके माता–पिता पुर्नविवाह करवाना चाहते है।

विधुर पत्नी की मृत्यु के बाद अलग–अलग प्रतिक्रिया करते है। अध्ययन क्षेत्र में निम्न प्रतिक्रियाएं पायी गयी। 60 प्रतिशत विधुर अपने परिवार व मित्रों के साथ अपना अधिकांश समय बिताते है।

20 प्रतिशत अपनी समआयु के व्यक्तियों के साथ ताश खेलकर व हुक्का पीकर, अखबार पढ़कर, कुछ स्थानीय मुद्दों पर चर्चा करके समय बिताते है।

15 प्रतिशत ने अपने को समाज से अलग कर लिया है। वे किसी के पास आते–जाते नहीं है, न ही किसी से बात करते है, उदास रहते है।

5 प्रतिशत अधिक धार्मिक हो गये हैं। वे अपना अधिकांश समय मंदिर/मस्जिद में गुजारते है और तीर्थ यात्रा पर आते–जाते रहते है।

स्वास्थ्य :

वैधव्य, विधुरों के जीवन को अनेक प्रकार से प्रभावित करता है। पत्नी को खो देने के दुःख व शोक की प्रतिक्रिया स्वरूप शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य में कमजोरी में वृद्धि होती है। (रमादान व कुटटीचीरा : 2013) इस सम्बन्ध में एक विस्तृत साहित्य उपलब्ध है जो वैवाहिक विघटन (पति/पत्नी मृत्यु के कारण) से सम्बन्धित शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य परिणामों को व्यक्त करता है।

शारीरिक स्वास्थ्य :

डेनिट, आर, शैहर तथा अन्य (2001) ने अपने अध्ययनों में पाया कि विधुर भोजन लेने में उतना आनन्द नहीं उठाते जितना पत्नी के साथ खाने में लेते थे। उनकी भूख कम हो गयी और उनका वजन भी घटा है। एविस ब्रैम्बिला एण्ड वास तथा मिकिनलो : 1991 ने निष्कर्षित किया है कि पति/पत्नी की मृत्यु व्यक्ति के मानसिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव डालती है। प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन साथी की मृत्यु पर अलग–अलग प्रकार से प्रतिक्रिया करता है।

अध्ययन क्षेत्र में पाया कि पत्नी की मृत्यु के बाद 70 प्रतिशत विधुर बीमार रहने लगे। उनमें से 35 प्रतिशत को डायबिटीज, 20 प्रतिशत को हृदय रोग, 10 प्रतिशत को हाइ ब्लड प्रेशर हो गया। 5 प्रतिशत को हर समय क्रोध आता रहता है।

मानसिक स्वास्थ्य :

अनेक अध्ययन दर्शाते है कि 'वैधव्य' का विधुरों के मानसिक स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। पिजर्सन तथा अन्य (2000) ने निष्कर्षित किया है कि कुछ ही समय में विधुरों में असाध्य रोगों के चलते चिकित्सकों के पास दौरों में वृद्धि हुई। अकेले रहने वाले विधुरों के मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य का स्तर कम पाया गया तथा उनमें विवाहित व्यक्तियों की अपेक्षा एकाकीपन चिन्ता तथा अवसाद की उच्च दर पायी गयी।

थॉम्पसन ने निष्कर्षित किया है कि वास्तव में पुरूषों के मानसिक स्वास्थ्य पर विधुर होने का प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

अध्ययन क्षेत्र में 30 प्रतिशत विधुर मानसिक रूप से बीमार पाये गये। वे अनिद्रा, अवसाद, निराशा चिन्ता, एकाकीपन से ग्रस्त थे। वे अपनी पत्नी को भूल नहीं पा रहे है और उसकी यादों में डूबे रहते हैं। उपर्युक्त में 10 प्रतिशत विधुरों ने अवसाद का कारण यौन तृप्ति का न होना बताया।

अन्य प्रभाव :

अध्ययन क्षेत्र में विधुरों पर वैधव्य के निम्न अन्य परिणाम भी देखे गये।

(i)–मादक द्रव्य व्यसन : 10 प्रतिशत विधुर मृत पत्नी को भूलने के लिए रात्रि में मद्यपान करके सोते है। 5 प्रतिशत को सुल्फा, गांजा, अफीम, तम्बाकू और गुटखा खाने की लत पड़ गयी है।

(ii)–अपराधिक गतिविधियों में संलिप्तता : अध्ययन क्षेत्र में उपर्युक्त 5 प्रतिशत मादक द्रव्यों का सेवन करने वाले विधुर जुआ खेलना, सट्टा लगाना, चोरी करना, अफीम बेचना जैसे अपराधिक कार्यों में भी संलग्न थे।

(iii)–परस्त्री सम्बन्ध : अध्ययन क्षेत्र में 2 प्रतिशत विधुरों के अपने आस–पास के निर्धन परिवारों की महिलाओं व घरेलू नौकरानियों के साथ अवैध सम्बन्ध पाये गये।

(iv)–मनोरंजन : अध्ययन क्षेत्र में समस्त विधुरों का कहना था कि पत्नी की मृत्यु के बाद उनका टी0वी0 देखना समाप्त हो गया है। जब वे पत्नी के साथ बैठकर टी0वी0 देखते थे तब पूरा परिवार साथ साथ टी0वी0 देखता था। अब बच्चे न्यूज नहीं देखते। वे धारावाहिक, स्पोर्ट्ज, आदि चैनल देखते है जो उन्हें पसन्द नहीं हैं। इसलिए वे टी0वी0 नहीं देखते।

निष्कर्ष :

अतः निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि पुरूष अपने जीवन की किसी भी आयु में विधुर हो। उनके जीवन के विविध पक्षों पर वैधव्य के नकारात्मक प्रभाव दिखाई पड़ते है। विधुरों की सहायता उनके बच्चों द्वारा की जाती है तथा कभी–कभी पड़ौसी, रिश्तेदार तथा मित्र भी सहायता प्रदान करते हैं।

संदर्भ सूची

Antonucci, T.C. (1990), "Social Support and Social relationship" in R.H. Binstock & L.K. George (Ed), Handbook of aging and social sciences (3rd edition), 205-227. San Diego, C.A. : Academic Press.

Bowlby J. (1980), "Lass, Sadness and dipression", Vol. 3, Newyork : Basic Books.

Bradsher, J.E. (1997) "Older Women and Widowhood" in Handbook on Women and Aging. Edited M. Coyle. Westpost.

Carr, D. House, J.S. Kessler, R.C., Nesse, R. Sonnega, J & Wortman CB(2000), "Marital Quality and Psychological Adjustment to widowhood among older adults : A Longitudinal analysis" Journal of Gerontology : Social Science, 55B(4), 5197-5207.

Carr D & Utz, R.L. (2002) "Late Life widowhood in the united states : New Direction & in theory and research", Aging International, 27 (1), 65-88.

Emirbayer M. & Micsche A (1998) "What is Agency?" American Journal of Sociology, 103(4), 962-1023.

Gupta, S (1999), "The effect of transition in marital status on men's performance of house work," Journal of the marriage & family, 61, 700-711.

Hagested, G.O. (1986), "The aging society as a context for family life," Daedalus, 115, 119-139.

Holmes, J.H. & Rane, R.H. (1967), The Social readjustment scale" Journal of Psychosomatic research" 11, 213-228.

Lec. G.R., Demaris, A : Bavin S. and Suldivan, R (2001), "Gender Differences in the depressive effect of widowhood in later life" Journal of Gerontology : Social Sciences 56B, 555-561.

Lee, G.R., Willetts, M. and Seccombe, (1998), "Widowhood and Depression : Gender Differences" Research on Aging 20.

Stroebe, M.S. & Stroebe, W (1983), "Who suffers more? Sex differences in health risk of the widowed," Psychological bulletin, 93 (2), 279-301.

Shahar, danit R. Schults, Richard, Shahar Avner, Wing, Reena R. (2001) "The Effect of widowhood on weight change, dietary intake and eating behaviour in the elderly population" Journal of Aging and health, 13 (2), 186-199.

Thompson, L.W. : Gallagher, D., Cover, Galewski, M, and Peterson, J. "Effects Bereavement on Symptoms of Psychopa Older Men and Women" Older Bereavement Research with Practical Applications. Edited by Dale A. Lund. New York : Hemisphere, 1.

Umberson, D., Wortman, C.B., and Kess. "Widowhood and Depression : Explaining Term Gender Differences in Vulnerability of Health and Social Behaviour 33 (1992).

Utz, Rebeccai, Carr, Deborah, Nesse, Randolph, Wortman, Camille B (2002), "The effect of widowhood on older adults", Social participation : An evaluation of Activity, Disengagement and Continuty Theories" The Gertonologist, 42 (4) : 522-533.

Utz, Rebecca L, Erin, B. Reidy, D. Carr, Randolph Nesse, Cammille Wortman (2004) "The daily consequences of widowhood" Journal of family issues, 25 (5) July, 683-712.

Widow – wikkipeida https://en.m.wikipedia.org >wiki>widow Bennett, Kate mary, soulsby, Laura K (2012). "Well being in Bereavement and widowhood". Illness crisis & loss 20 (4) : 321.

Wortman, C.B. and Silver, R.C. "Succe Mastery of Bereavement and Widowhood course perspective" IN successful aging perspectives from the behavioral sciences by Paul B. Baltes and Margaret M. Balte York, Cambridge University Press, 1990-264.